



**Photo-1:** Department of International Relations has organized a National Seminar on *India's Freedom Movement and Untold Stories of Andaman and Nicobar Islands during 28<sup>th</sup> -29<sup>th</sup> April 2022. Professor Raj Kumar Kothari, Vice Chancellor, The Sanskrit College and University, Kolkata was the Chief guest of the seminar (on the podium)* 



**Photo-2:** Prof. Utham Kumar Jamadhagni, Professor & Head, Department of Defence and Strategic Studies, University of Madras, Chennai, Tamil Nadu, India, delivered valedictory address during the Seminar (on the podium)



Day 2

28 AUG 2021

 13:00-15:00 hrs
 KATHMANDU
 12:45-14:45 hrs
 NEW DELHI

 16:15-18:15 hrs
 TOKYO
 17:15-19:15 hrs
 SYDNEY

 15:15-17:15 hrs
 BEIJING
 10:15-12:15 hrs
 MOSCOW

 08:15-10:15 hrs
 LONDON
 03:15-05:15 hrs
 WASHINGTON DC

#### SESSION 9 Indo-Pacific Affairs

Chair: Dr. Alok Kumar Gupta, Associate Professor and Dean School of Humanities and Social Science, Central University of Jharkhand.

- Dr. Krishnendra Meena, Associate Professor, School of International Studies, Jawaharlal Nehru University, Indian Ocean.
- Dr. Bibhuti Bhushan Biswas, Assistant Professor, Central University of Jharkhand.
- Dr. Rajashree Padhi, Assistant Professor, Central University of Jharkhand
- Dr. Aparna, Assistant Professor, Central University of Jharkhand
- Dr. Subhash Kumar Baitha, Assistant Professor, Central University of Jharkhand
- Dr. Priva Madhulika Ekka, Assistant Professor, Central University of Jharkhand
- · Md. Mubarak Ali, Assistant Professor, Central University of Jharkhand

Supported by: Department of Politics and International Relations and Department of Public Administration, Central University of Jharkhand.

**Photo-3:** Department of International Relations, Central University of Jharkhand has collaborated with Nepal Institute for International Cooperation and Engagement (NIICE), Kathmandu, Nepal for an International Conference held during 27-28 August 2021. Under the Chairpersonship of the Dean Dr.



Alok Kumar Gupta all the faculty members of the department have presented their research papers. In this conclave from all over the world 100+ universities have participated.

### INTERNATIONAL WEBINAR ON

Post Covid-19 Development and Challenges in South Asia 27th-28th June, 2020

### Organized by



Social Science Research Association of India (SSRAI), (An Informal Group of Social Scientists)



Dept. of Geography, Sophia Girls' College (Autonomous), Ajmer (Rajasthan)



Dept. of Politics & International Relations Central University of Jharkhand, Ranchi



South Asia Studies Centre, Dept. of Geography, Savitribai Phule University, Pune (Maharashtra)

**Photo-4:** Department of International Relations, Central University of Jharkhand has collaborated with South Asia Studies Centre, Savitribai Phule University, Pune, Maharashtra, Department of Geography, Sophia Girls College, Ajmer, Rajasthan and Social Science Research Association of India (SSRAI) for an



International webinar on the topic "Post-Covid 19 Development and Challenges in South Asia" during 27<sup>th</sup> -28<sup>th</sup> June 2020.



**Photo-5:** Department of International Relations has organized an International Conference on *Soft Power* & *Public Diplomacy in India and China during 21-22 Feb 2019. Along with many international and national delegates Professor Swarn Singh, Centre for International Politics, Organisation &* 



Disarmament, School of International Studies (on the podium), Visiting Professor, University of British Columbia (Vancouver, Canada) has graced the occasion.



**Photo-6:** Department of International Relations has organized an International Seminar on "*International Relations in India: Evidences from History, Scholastics Writings and Diplomatic Practices*" during 25-27 April 2018. Along with many international and national delegates Ambassador Dayakara Ratakonda, Former Ambassadors and High Commissioners, Ambassador Lokraj Baral, Former Ambassador Nepal,



Professor Ashwini Mohapatra, Centre for West Asian Studies, School of International Studies, JNU, New Delhi has gassed this occasion.

# सीयूजे में अनकही कहानियों पर दो दिवसीय सेमिनार प्रारंभ

#### राष्ट्रीय सागर संवाददाता

रांची : अंर्तराष्टीय संबंध विभाग. झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय ब्राम्बे में काउंसिल ऑफ सोशल रिसर्च द्वारा प्रायोजित,भारत के स्वतंत्रता आंदोलन और अंडमान और निकोबार द्वीप समृह की अनकही कहानियों पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया। इससे पूर्व संगोष्ठी का शुभारंभ उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. विभित भषण विश्वास ने अंडमान और निकोबार द्वीप समह के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी दी। इसके बाद स्वागत भाषण डॉ. आलोक कमार गुप्ता (डीन ऑफ सोशल साइंस. सीयजे) ने दिया। उद्घाटन भाषण



डॉ. राजकमार कोठारी (प्रोफेसर. राजनीति विज्ञान विभाग डायमंड हार्बर विमेंस युनिवर्सिटी, पश्चिम बंगाल) ने दिया। इन्होंने रवींद्र नाथ टैगोर के बारे में बात की। रवींद्रनाथ टैगोर और उनकी राष्ट्रवाद की अवधारणा को उन्होंने आजादी का अमत महोत्सव से जोडा। टैगोर राष्ट्रवाद के पारंपरिक विचार का पालन नहीं करते थे, लेकिन उनका विचार गैर-प्राच्य थाय गैर-देशी और गैर-भारतीय था। उनका मानना था कि एक देशभक्त होने के लिए राष्ट का हिस्सा होना जरूरी नहीं है। टैगोर ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन किया लेकिन राष्ट्र के लिए उनकी एक अलग दृष्टि और विचार था। वहीं प्रोफेसर मनोज कमार ने अकादिमक विचारों और दिमागों को एक साथ लाने के लिए ऐसे सेमिनारों की आवश्यकता पर जोर दिया । डॉ. आलोक गुप्ता ने सेल्युलर जेल में बंदियों पर किए गए अत्याचारों पर प्रकाश डाला और बताया कि कैसे अंडमान और निकोबार द्वीप समह के बारे में आम

लोग केवल इतना ही जानते हैं। और द्वीपों में और उसके आसपास सावरकर भी वहां दस साल के लिए जेल गए थे और अपनी किताब में उन्होंने और अन्य कैदियों के दर्द के स्तर का उल्लेख किया है। उन्होंने भारत-प्रशांत क्षेत्र में समकालीन समुद्री सुरक्षा से इस विषय की प्रासंगिकता का भी उल्लेख किया। पूरे भारत से आए हुए विभिन्न प्रीफेसरों और शोध विद्वानों ने भी अंडमान और निकोबार से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपने अंतर्दृष्टिपूर्ण और रोचक पेपर प्रस्तृत किए।कछ विषय थे एबरडीन की लडाई अंडमानी की अनकही कहानी अंडमान और निकोबार द्वीप समह (एएनआई) का गहरा बहलवाद और अतिरिक्त क्षेत्रीय शक्तियों की छायाष्य आदि। शोधकताओं ने अंडमान द्वीप समृह में जापानी शासन, द्वीपों के इतिहास. द्वीपों के वर्तमान सामरिक महत्व

की राजनीति के बारे में बात की। इस अवसर पर डॉ. देबाशीष नंदी एसोसिएट प्रोफेसर और प्रमुख, राजनीति विज्ञान विभाग, काजी विश्वविद्यालय. नजरूल आसनसोल, पश्चिम बंगाल और प्रो. उत्तम कमार जमदिग्न (प्रोफेसर और प्रमुख, रक्षा और सामरिक अध्ययन विभाग. विश्वविद्यालय, तमिलनाड्) और डॉ केएम परिवेलन (एसोसिएट प्रोफेसर, स्टेटलेसनेस एंड रिफ्युजी स्टडीज, स्कुल ऑफ स्टेटलेसनेस एंड रिफ्युजी स्टडीज के लिए)कानून, अधिकार और संवैधानिक शासन, टाटा सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान, मुंबई ने तीन अलग -अलग सत्रों की अध्यक्षता की और संगोष्ठी में सामने आए विचारों की प्रशंसा की।







Photo-7: A National Seminar on "India's Freedom Movement and Untold Stories of Andaman and Nicobar Islands" was organised during April 28-29, 2022 under the auspices of Department of International Relations, School of Humanities and Social Sciences, Central University of Jharkhand, Cheri-Manatu, Ranchi, Jharkhand, India, sponsored by Indian Council of Social Science Research (ICSSR), New Delhi.





**Photo-8:** An International Webinar on "India in the Indo-Pacific: Interests, Challenges and Prospects" was organised during 14th & 15th of October 2020 under the auspices of Department of International Relations, School of Humanities and Social Sciences of Central University of Jharkhand, Brambe, Ranchi, India.





**Photo-9:** The Department of International Relations, Central University of Jharkhand has organized a Special Talk on "*Indo-Pacific as the New Strategic Narratives*" by Dr. Pragya Pandey, Research Fellow, Indian Council of World Affairs, New Delhi on 3rd May 2023. This program was organized under the University Outreach Program of the Indian Council of World Affairs, New Delhi.





**Photo-10:** On 13 April, 2018 Professor Indra Kumar Chaudhary, Dean, School of Social Sciences, Ranchi University, Ranchi, and Prof. C.P. Singh, Pro Vice- Chancellor, KDS University, Darbhanga, Bihar has delivered a distinguished lecture on the topic "*Philosophical Roots of Indian Constitution and Dr B R Ambedkar*" at Department of International Relations, Central University of Jharkhand, Ranchi, Jharkhand. Honourable Vice- Chancellor Prof. Nand Kumar Yadav 'Indu' has presided the event.



## राज व्यवस्था बनाये रखने के लिए शासक को लेना होता है सख्त निर्णय : डॉ नयन



 सीयूजे में कौटिल्य के राज कौशल और उसकी प्रासंगिकता पर व्याख्यान टांची. मनोहर पारिकर इंस्टीट्यूट ऑफ डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस के सीनियर रिसर्च एसोसिएट डॉ राजीव नयन ने कहा है कि एक मजबूत राज्य व्यवस्था को बनाये रखने के लिए शासक को कभी-कभी सख्त निर्णय भी लेना पड़ता है. उन्होंने कहा कि कौटिल्य की सोच अखिल भारतीय थी और वर्तमान में कौटिल्य द्वारा वर्णित राज्य कौशल के कई पहलुओं पर शोध किये जाने की जरूरत है. डॉ नयन बुधवार को केंद्रीय विवि, झारखंड (सीयूजे) अंतर्गत राजनीति एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर

कौटिल्य का राजकौशल और उसकी प्रासंगिकता विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान में बोल रहे थे. विवि के डीन सह विभागाध्यक्ष डॉ आलोक कुमोर गुप्ता ने भी अपने विचार रखे. धन्यवाद ज्ञापन डॉ अपर्णा ने किया. इस अवसर पर डॉ विभूति भूषण विश्वास, डॉ राज श्री पाढ़ी, डॉ प्रिया मधुलिका, डॉ मुबारक अली, रवि कुमार, गीतेश कुमार, अमित सिंह, अंजनेयुलु मुदिराज आदि मौजूद थे.

**Photo-11:** On 24 November 2021, Dr. Rajeev Nayan, Senior Research Fellow, Manohar Parrikar Institute of Defence Studies and Analysis (MIDSA), New Delhi, has delivered a distinguished lecture on the topic "Statecraft of Kautilya" at Department of International Relations, Central University of Jharkhand, Ranchi, Jharkhand.



# भारत की परमाणु नीति परिपक्व

#### लाइफ रिपोर्टर 🍙 रांची

जवाहरलाल नेहरू विवि, दिल्ली स्थित सेंटर फॉर अमेरिकन, लैटिन अमेरिकन एंड कैनेडियन स्टडीज के प्रो अस्विंद कुमार ने कहा कि भारत की परमाणु नीति अत्यंत परिपक्व है. सुरक्षा के द्रष्टिकोण से अपने लक्ष्य की ओर तैनात है. जवाहरलाल नेहरू और लाल बहादुर शास्त्री की अपेक्षा इंदिरा गांधी की भू-राजनीतिक एवं सामरिक समझ ज्यादा परिपक्व और अच्छी थी. परिणामस्वरूप उन्होंने चीन द्वारा परमाणु शक्ति हासिल

 केंद्रीय विवि, झारखंड में भारत की परमाणु नीति पर व्याख्यान

करने के बाद भारत के विकल्प को खुला रखा. श्रीमती गांधी ने समझा कि भारत की सुरक्षा की दृष्टि से अंतरराष्ट्रीय व्यक्तित्व को प्रखर और मजबूत बनाने के लिए परमाणु शक्ति की आवश्यकता है. इसलिए भारत ने पहला परमाणु परीक्षण 1974 में किया. हालांकि भारत इतना साहस नहीं जुटा सका कि स्वयं को परमाणु शक्ति घोषित कर सके. इंदिरा गांधी ने उस परीक्षण को शांति के लिए किया गया परीक्षण बताया. डॉ अरिवंद बुधवार को केंद्रीय विवि, झारखंड (सीयूजे) में राजनीति एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग द्वारा भारत की परमाणु नीति पर आयोजित ऑनलाइन व्याख्यान में बोल रहे थे. भारत ने पर्याप्त आंकड़े इकहा कर लिये हैं: उन्होंने कहा कि वर्ष 1998 में जब अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भारत ने पांच परीक्षण किये, तो तीन महत्वपूर्ण घोषणाएं की गयीं. पहला यह कि भारत अब एक परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र है. दूसरा यह कि भारत कभी भी अपनी परमाणु क्षमता का उपयोग पहले नहीं करेगा और तीसरा भारत अब और परीक्षण नहीं करेगा. क्योंकि इस परीक्षण के माध्यम से भारत ने पर्याप्त आंकड़े इकठ्ठा कर लिये हैं. इससे पूर्व विवि के प्रभारी कुलपित प्रो आरके डे ने आगंतुकों का स्वागत किया. विभागाध्यक्ष डॉ अलोक कुमार गुप्ता ने विषय प्रवेश किया. डॉ अपंणा ने धन्यवाद ज्ञापन किया. इस अवसर पर डॉ राजश्री पाढ़ी आदि मौजूद थे.

**Photo-12**: On 23 June, 2021 Professor Arvind Kumar, Centre for Canadian, US & Latin American Studies, School of International Studies, JNU, New Delhi has delivered distinguished lecture on the topic "Nuclear Policy of India" at Department of International Relations, Central University of Jharkhand, Ranchi, Jharkhand.



# गांधी जी और सत्याग्रह विषय पर सीयूजे में ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित

## राष्ट्रीय सागर संवाददाता

रांची : झारखण्ड केंद्रीय विश्वविद्यालय का राजनीति एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग, आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला अयोजित करा रही है। उसी व्याख्यान श्रृंखला के क्रम में मंगलवार को गांधी जी और सत्याग्रह विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। जिसमें विशिष्ट अथिति के रूप में नेह सेंट्रल युनिवर्सिटी के एसोसिएट प्रोफेसर विश्वजीत महापात्र मौजूद



जी कितने बड़े रणनीतिकार तथा राजनीतिज्ञ थे। डाॅ. महापात्रा ने

विभागाध्यक्ष तथा डीन डॉ. महात्मा गांधी के सत्याग्रह के इस अच्छाई से किसी भी बुराई आलोक कुमार गुप्ता ने महात्मा चर्चा के दौरान यथार्थवाद तथा पर विजय पा सकता है। इसलिए के सत्याग्रह पर अपने आदर्शवाद पर भी चर्चा किया। हमें व्यक्ति से नही व्यक्ति के विचार रखे। तत्पश्चात व्याख्यान उन्होंने भलीभॉति समझाया कि अवगुणों से लड़ने पर जोर देना को आगे बढ़ाते हुए डॉ. महापात्रा गांधी आदर्शवादी नहीं यथार्थवादी चाहिए। व्याख्यान के अंत में ने कहा कि गांधी जी ने सत्य के थे। जिन्होंने हथियारों के युग में धन्यवाद ज्ञापन, व्याख्यान श्रृंखला लिए आग्रह अपनाया। जो बाद में अहिंसा को देश की आजादी के की संयोजिका डॉ. अपर्णा ने दिया। चलकर सत्याग्रह हुआ। अंगेजो से लिए अपना हथियार बनाया। विभाग के शिक्षक डॉ. विभूति आजादी के लिए सत्याग्रह तथा आगे गांधी जी के विषय में भूषण विश्वास, डॉ. मुबारक अहिंसा गांधी जी के दो प्रमुख उन्होंने बताते हुए कहा कि अली, शोधार्थी हनी राज, रवि हथियार रहे। महात्मा गांधी के जितना महत्वपूर्ण लक्ष्य है उतना कुमार, दीपांकर डे, शौभिक सत्याग्रह से आज के युवा पीढ़ी ही महत्वपूर्ण माध्यम भी है। चंटर्जी, गीतेश कुमार, अमित सिंह को ये समझना चाहिए की गांधी सिर्फ लक्ष्य की प्राप्ति ही जरूरी के अलावा विभाग के एम ए के नहीं है। गांधी के अनुसार इंसान छात्र एवं अलग-अलग विभागों के वस्तुतः अच्छा है तथा वो अपनी छात्र भी जुड़े रहे।







Photo-13: On 2 November, 2021 Dr. Biswajit Mohapatra, Associate Professor, North Eastern Hill University, Shillong has delivered distinguished lecture on the topic "Gandhi ji and Satyagraha" at Department of International Relations, Central University of Jharkhand, Ranchi, Jharkhand.



#### सीयूजे में प्रो. ईशानी ने भारत की सॉफ्ट पावर और विदेश नीति पर दिया व्याख्यान



रांची : केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड के राजनीति एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग द्वारा मंगलवार को विभागीय व्याख्यान श्रंखला 2021 की अगली कड़ी में वक्ता प्रो. ईशानी नस्कर ने भारत की सॉफ्ट पावर और विदेश नीति, संस्कृति, मीडिया, फिल्में, साहित्य और खेल की भूमिका विषय पर व्याख्यान दिया। प्रो. ईशानी नस्कर अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय,कोलकाता, पश्चिम बंगाल में कार्यरत है। डॉ इशानी नस्कर ने अपने एक घंटे के व्याख्यान में सॉफ्ट पावर कांसेप्ट के जनक हार्वर्ड के प्रसिद्द बुद्धिजीवी प्रो. जोसेफ नाए द्वारा 90 के दशक में प्रतिपादित किया गया था। यह मूल रूप से राजनयिक उत्तोलन के लिए मूर्त और अमूर्त अवधारणाओं को भुनाने के लिए विदेश नीति के एक टूल की तरह उपयोग में लाया जाता है। सॉफ्ट पावर एक आवश्यकता बनती जा रही है। पिछले दशक में सैन्य और आर्थिक शक्ति का उदय देखा गया। लेकिन अमेरिका और चीन सत्ता के पारंपरिक सांचे से बाहर आकर वैधता हासिल करना चाहते थे। भारत ने इस अवधारणा को देर से अपनाया है। यह बहुत बड़ा क्षेत्र है और सॉफ्ट पावर को मापने का कोई पैमाना नहीं है। वास्तव में यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि सार्वजनिक कूटनीति सांस्कृतिक कूटनीति में कैसे सहायता करती है। भारत ने अन्य देशों को कैसे प्रभावित किया है, इसके कई अन्य उदाहरण हैं। प्राचीन भारत में नालंदा विश्वविद्यालय और ओदंतपुरी जैसे उच्च शिक्षा के केंद्र थे जहां पूरी दुनिया से छात्र पढ़ने आते थे। हुएन सांग और अलबेरूनी जैसे कई यात्री भारत आए और लेखनी के माध्यम से यहां के अकूत सांस्कृतिक धरोहर की चर्चा की है। आधुनिक समय में बहुत से भारतीय प्रवासी बाहर हैं। नेहरू ने प्रवासी भारतीयों पर ध्यॉन नहीं दिया लेकिन राजीव गांधी ने 1984 में विदेशी मामलों का विभाग बना दिया। बाद के सरकारों ने इसे बड़े पैमाने पर आगे बढाया है। भारतीय प्रवासी पुरी दुनिया में हैं। अब प्रत्येक 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाता है। इससे बाहर रहने वाले भारतीयों को अपनी जड़ों से जुड़ाव महसूस करने में मदद मिलती है। हमारी संस्कृति, मीडिया, फिल्में,गाने, बॉलीवुड के प्रसिद्ध अभिनेताओं को भी बाहर बहुत प्रभाव है। रामायण जैसा साहित्य इतना प्रसिद्ध है कि हर दक्षिण पूर्व एशियाई देश में रामायण का अपना संस्करण है।

**Photo-14:** On July 27, 2021 Prof. Ishani Naskar, Department of International Relations, Jadavpur University, Kolkata, West Bengal has delivered distinguished lecture on the topic "Soft Power and Foreign Policy of India: Role of Culture, Media, Films, Literature and Sports" at Department of International Relations, Central University of Jharkhand, Ranchi, Jharkhand.



#### लिंग संवेदीकरण की चुनौतियों पर ऑनलाइन व्याख्यान

## जेंडर संवेदीकरण की महत्वपूर्ण आवश्यकता



देशप्राण संवाददाता

रांची,9 जुलाई केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड राजनीति एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग द्वारा शुक्रवार को लिंग संवेदीकरण आधुनिक समय में संभावनाओं एवं चुनौतियों पर एक ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वेस्टर्न सिडनी विश्वविध्यालय, ऑस्ट्रेलिया के प्राध्यापक डा.सजल रॉय. (स्कूल ऑफ सोशल साइंस एण्ड स्कूल ऑफ बिजनस) ने छात्रों एवं शिक्षक को लिंग संवेदिकरण आधुनिक समय में संभावनाओं एवं चुनौतियों पर अपने व्याख्यान द्वारा संबोधित किया।

डॉ सजल रॉय ने अपने 70 मिनट के व्याख्यान में कहा कि जेंडर संवेदीकरण कैसे और महत्वपूर्ण है, दूसरा असंवेदनशीलता के कौन से तत्व हमारे आसपास हैं और उनसे कैसे निपटें और तीसरा कौन से पावर- मार्कर जेंडर संवेदीकरण को प्रभावित करते हैं। इस बात पर खास जोर डाला कि इस कोविड महामारी में लिंग संवेदीकरण अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीयता कम हो गई है और लोग घर और अस्पतालों में ज्यादा वक्त व्यतीत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सभी को संवेदनशील होना पडेगा। सभी के लिए अधिक अवसर पैदा करने और समाज और राष्ट्र में समान रूप वितरित करने शक्ति आवश्यकता है। अवसर पर राजनीति एवं अंतर्राष्ट्रीय विभाग के संबंध प्राध्यापक डा. राजश्री पाढी, अपर्णा, अन्य प्राध्यापक, शोधार्थी एवं अन्य संकाय के भी छात्र गण मौजद थे। डा. बिभूती बिस्वास ने विभाग की ओर से धन्यवाद ज्ञापन किया।

**Photo-15:** On 9 July, 2021 Dr. Sajal Roy, Western Sydney University, Australia has delivered distinguished lecture on the topic "Gender Sensitization: Prospects and Challenges in Modern Time" at Department of International Relations, Central University of Jharkhand, Ranchi, Jharkhand.





**Photo-16:** On 06 July, 2022 Dr. Keshab Giri, Lecturer in International Relations, Department of Governance and International Relations, University of Sydney, Australia has delivered distinguished lecture on the topic "Gender and War in South Asia" at Department of International Relations, Central University of Jharkhand, Ranchi, Jharkhand.





**Photo-17:** On 23 July, 2021 Prof. D. Subah Chandran, Professor & Dean, Conflict Resolution International Strategic and Security Studies, School of Conflict and Security Studies, National Institute of Advanced Studies (NIAS), Bengaluru has delivered distinguished lecture on the topic "*Emerging World Order: Challenges and Options for India*" at Department of International Relations, Central University of Jharkhand, Ranchi, Jharkhand.





**Photo-18:** On 19 July, 2021 Dr. Sudhir Kumar Singh, Department of Political Science, Dyal Singh College, University of Delhi, New Delhi has delivered distinguished lecture on the topic "Sino-Indian Relations: Post Ladakh Challenges" at Department of International Relations, Central University of Jharkhand, Ranchi, Jharkhand.



ही क

रड ऑ

43

नेत

र्वा.

रण

हो ।

हा की

है।

की

#### CENTRAL UNIVERSITY OF JHARKHAND DEPARTMENT OF INTERNATIONAL RELATIONS SCHOOL OF SOCIAL SCIENCES

जिस ठेकेदार के माध्यम से बुदा विधायक बंधु तिकीं सहित अन्य रो कर हालबेहाल है।

सीयूजे में 'विश्व के साथ अमेरिकी जुड़ाव' पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

## भारत के साथ अमेरिकी जुड़ाव बढ़ रहा है : प्रो अरविंद कुमार

नवीन मेल संवाददाता। रांची केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीवजे), चेरी-मनात, रांची के अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग ने बुधवार को 'विश्व के साथ अमेरिकी जुड़ाव' विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया। इसमें जेएनयु, सेंटर फॉर स्टडीज ऑफ युनाइटेड स्टेट्स स्टडीज एंड कनाडा विभाग, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के प्रोफेसर अरविंद कुमार ने व्याख्यान दिवा। डॉ. आलोक कुमार गुप्ता, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान और लोक प्रशासन विभाग, डीन, स्कुल ऑफ ह्यमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज, सेंट्रल वृनिवर्सिटी ऑफ ज्ञारखंड ने डॉ अरविंद कुमार का स्वागत किया और विषय परिचय दिवा। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में



उन अभूतपूर्व चुनीतियों का सीक्षण विवरण दिया, जिनका समकालीन विश्व में कई विकासों के कारण अमेरिकी विदेश नीति को सामना करना पड़ रहा है। डॉ अरविंद कुमार ने अपने व्याख्यान में संयुक्त राज्य अमेरिका के महत्वपूर्ण विकास पर ध्यान केंद्रित किया, जिसने दुनिया के विधिन्न हिस्सों में इसकी निरंतर

भागीदारी सनिश्चित की।अरविंद कुमार के अनुसार, चीन चाहता है कि एशियाई महाद्वीप एकध्रुवीय हो क्योंकि इससे उसकी वैश्विक और क्षेत्रीय आकांक्षाएं पूरी होंगी। उन्होंने माना कि भारत-अमेरिका संबंध ने जुनियर बुश युग के दौरान अपने स्वर्णिम चरण में प्रवेश किया और तब से यह एक लंबा सफर तब कर चका है। तदनसार, भारत के बारे में अमेरिकी धारणा में बदलाव और अपनी अर्थव्यवस्था के संदर्भ में भारत के बदलते अंतरराष्ट्रीय छवि के कारण भारत के साथ अमेरिकी जुडाव बढ रहा है। समकालीन भारत कर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, संघर्ष समाधान और अन्य वैश्विक समस्याओं के समाधान का एक हिस्सा बन गवा है।

**Photo-19:** On 10 April, 2024 Professor Arvind Kumar, Centre for Canadian, US & Latin American Studies, School of International Studies, JNU, New Delhi has delivered distinguished lecture on the topic "US Engagement with the World" at Department of International Relations, Central University of Jharkhand, Ranchi, Jharkhand.



राष्ट्रीय नवीन मेल

### रांची सिटी

## सीयूजे में 'प्रमुख शक्तियों की विदेश नीति का अध्ययन क्यों करें' पर व्याख्यान का आयोजन

# प्रमुख शक्तियों की विशेषता है संस्था निर्माण एवं प्रबंधन : डॉ मोनीश

क्षेत्रीय शक्तियों के उपद्रव रोकने की रणनीति तय करेगी भारत की स्थिति

भारत प्रमुख शक्ति बनने की रखता है दृढ़ आकांक्षा

#### नवीन मेल संवाददाता। रांची

ज्ञारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूजे) के अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग ने सोमवार किया और सत्र प्रारंभ किया। डॉ आलोक इंस्टीट्वट ऑफ इंडो-पैसिफिक स्टडीज, अंतरराष्ट्रीय संबंध विधाग की सहायक निधाई गई भूमिका के इर्द-गिर्द घुम रहे भ्रम



प्रोफेसर डॉ अपर्णा ने अतिथि का स्वागत को 'प्रमुख शक्तियों की विदेश नीति का कुमार गुप्ता, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति अध्ययन क्यों करें' विषय पर एक विशेष विज्ञान और लोक प्रशासन विभाग, डीन, व्याख्यान का आयोजन किया। इसमें वक्ता स्कूल ऑफ ह्यमेनिटीज एंड सोशल के रूप में डॉ मोनीश ट्रंगवाम, कलिंगा साइंसेज, सेंट्रल युनिवर्सिटी ऑफ झारखंड ने स्वागत भाषण दिवा। उन्होंने समकालीन नई दिल्ली के मानद निदेशक उपस्थित थे। अंतरराष्ट्रीय प्रणाली में 'प्रमुख शक्ति' की ज़ारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय के स्थिति की अवधारणा और उनके द्वारा

पर प्रकाश डाला। डॉ आलोक ने अतिथि वक्ता को प्रश्न के साथ आर्मित्रत किया। उन्होंने प्रश्न किया कि प्रमुख शक्तियों को कैसे परिभाषित किया जाना चाहिए और प्रमुख शक्तियों को परिभाषित करने के मानदंड क्या हैं? डॉ ट्रंगबाम ने कहा कि भारत ने कभी किसी गठबंधन में प्रवेश नहीं किया और मुख्य रूप से रणनीतिक साझेदारी पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने कहा कि प्रमुख शक्तियों के पास व्यापक विदेश नीति टलिकट का एक सेट होता है, जो उन्हें सैन्य, अर्थव्यवस्था, प्रवासी और प्रौद्योगिकी जैसी अंतरराष्ट्रीय प्रणाली में प्रमुख शक्ति बनाता है। बहुधुवीय विश्व में, प्रमुख शक्तियों के सामने समस्या वह है कि वे एक जैसे नहीं हैं और उनकी विदेश नीति के दृष्टिकोण में भिन्नता है, इसलिए उनकी विदेश नीति टलिकट भी भिन्न हैं। डॉ मोनीश ने स्वीकार किया कि भारत के सामने

#### मानदंड पर अब भी चल रही है बहस

डॉ मोनीश ट्रांगबाम ने अपने व्याख्यान की शुरुआत में उन मानदंडों की गणना की, जिनके आधार पर अंतरराष्ट्रीय प्रणाली के भीतर एक राष्ट्र को प्रमुख शक्ति के रूप में वगीर्कृत किया जा सकता है। वैसे, उन्होंने स्वीकार किया कि वर्धाप इसका कोई निश्चित मानदंड नहीं हो सकता है और अभी इस पर बहस चल रही है। मोनीश के अनुसार, राज्य-केंद्रित और शक्ति-केंद्रित अंतरराष्ट्रीय प्रणाली क्षमताओं में आर्थिक ताकत, जीडीपी, सैन्य कौशल, सैन्य हार्डवेयर संपत्ति, तकनीकी क्षमताएं, आंतरिक समीकरण (उनके नागरिकों की आकांक्षाएं), वैश्विक शासन में योगदान करने के लिए जिम्मेदारियों की धारणाएं, और बहुपक्षीय संगठनों का एजेंडा तय करने की क्षमताएं आदि प्रमुख शक्ति की स्थिति के कुछ प्रमुख निर्धारक हैं। संस्था निर्माण एवं प्रबंधन प्रमुख शक्तियों की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। हालांकि, इन क्षमताओं की विस्तृत सूची नहीं है।

बड़ी चुनौती है। हालांकि, आंतरिक कथा का उपयोग करता है, वह समकालीन से पता चलता है कि भारत एक प्रमख शक्ति बनने की दृहता से आकांक्षा रखता है। चीन, पाकिस्तान और अन्य जैसी क्षेत्रीय शक्तियों की वृद्धि और उपद्रव शक्ति को रोकने के लिए भारत कितनी चतुराई से दूर की शक्तियों

अंतरराष्ट्रीय प्रणाली के भीतर भारत की स्थिति निर्धारित करेगा। भारत जिस तरह से अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के भीतर अपना बह-सरिखण तैयार करता है, उससे अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में उसकी स्थिति भी तय होगी।

जनियर कैडेट अंडर



Photo-20: On 15 April, 2024 Dr. Monish Tourangbam, Honorary Director of the Kalinga Institute of Indo-Pacific Studies (KIIPS), former Associate Professor at the AIIS, Amity University, Noida and a Senior Assistant Professor at the Department of Geopolitics and International Relations, MAHE, Manipal delivered distinguished lecture on the topic "Why Study Foreign Policy of Major Powers" at Department of International Relations, Central University of Jharkhand, Ranchi, Jharkhand.



# चुनावी प्रक्रिया लोकतत्र के लिए जरुरी, पर पर्याप्त नहीं : प्रो रजन

मतदान वैधानिक. संवैधानिक और काननी अधिकार है चनावी लोकतंत्र के लिए अनिवार्य शर्त है निष्पक्ष चुनाव

नवीन मेल संवाददाता। रांची सेंट्रल यनिवर्सिटी ऑफ ग्रारखंड (सीवजे) के अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग ने शुक्रवार को 'लोकतंत्र के लिए चुनाव क्यों आवश्यक हैं. प्रतिनिधित्व के सार के रूप में मतदान की खोज' विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आवोजन किया। व्याख्यान प्रो रवि रंजन, फेलो, राज्यसभा और जाकिर हसैन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ने दिया। कार्यक्रम की संवोजक डॉ अपर्णा, सहावक प्रोफेसर, अंतरराष्ट्रीय संबंध



विभाग ने प्रो रवि रंजन का स्वागत किया और विषय पेश किया। डॉ आलोक कमार गुप्ता, एसोसिएट प्रोफेसर, डीन, स्कूल ऑफ ह्यमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज ने अपने स्वागत भाषण में लोकतंत्र और चुनाव की अवधारणा के इदं-गिर्द घुमती चर्चा पर प्रकाश डालते आलोक ने दिन के वक्ता को प्रश्न के साथ आमंत्रित किया, वर्तमान लोकसभा चुनाव में वोट प्रतिशत में कमी को देखते हुए आज लोकतंत्र.

चुनाव और मतदान के अधिकार को कैसे परिभाषित किया जाना चाहिए? प्रो रवि रंजन ने अपने व्याख्यान के प्रारंभ में बताया कि लोकतंत्र, लोकतंत्रीकरण और प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए चुनाव क्यों आवश्यक हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि चुनावी हुए एक संक्षिप्त विवरण दिया। डॉ प्रक्रिया सफल लोकतंत्रीकरण के लिए आवश्यक है, लेकिन पर्यापा नहीं। प्रो रवि रंजन के अनसार, प्रतिनिधित्व से परे, लोकतंत्र को कल्याण और खुशहाली भी

सुनिश्चित करनी होती है। उन्होंने मतदान को वैधानिक, संवैधानिक और काननी अधिकार बताया। उन्होंने जलाई 2023 के सप्रीम कोर्ट के फैसले के बारे में बात की. जिसमें कहा गया था कि यह विरोधाभासी है कि लोकतंत्र सॉविधान की एक बुनियादी विशेषता है, लेकिन बोट देने के अधिकार को मौलिक अधिकार का दर्जा नहीं दिया गया है। अदालत ने तर्क दिया कि सचित विकल्प के आधार पर वोट देने का अधिकार लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण घटक है। तथापि, कुछ लोगों का तर्क है कि यह एक संवैधानिक अधिकार होना चाहिए। आगे उन्होंने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव चुनावी लोकतंत्र के लिए अनिवार्य शर्त है. लेकिन हर चुनाव इन मानदंडों को पुरा नहीं करता है।

Photo-21: On 10 May, 2024 Prof. Ravi Ranjan, Fellow, Rajya Sabha, Parliament of India, Professor, Department of Political Science, Zakir Hussain college, University of Delhi, New Delhi has delivered distinguished lecture on the topic "Why are Elections necessary for Democracy? Exploring Voting as Essence of Representation" at Department of International Relations, Central University of Jharkhand, Ranchi, Jharkhand.



## भारत के बढ़ते वैश्विक कद से बदली है स्थिति : प्रो पत

- वर्ष 2020 के गलवान मुद्दे के बाद खराब हुए हैं चीन से रिश्ते
- भारत के हितों को कोई भी बढ़त नहीं देना चाहता है चीन

नवीन मेल संवाददाता। रांची
सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ झारखंड
(सीयूजे) के अंतरराष्ट्रीय संबंध
विभाग ने 'चीन-भारत संबंध और
बदलती विश्व व्यवस्था' पर एक
विशेष व्याख्यान का आयोजन किया।
नई दिल्ली स्थित ओआरएफ के
अध्ययन और विदेश नीति के
उपाध्यक्ष और किंग्स इंडिया इंस्टीट्यूट
के अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रोफेसर,
दिल्ली स्कूल ऑफ ट्रांसनेशनल
अफेयर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय के
मानद निदेशक प्रो हर्ष वी. पंत ने यह
व्याख्यान दिया। उन्होंने स्पष्ट किया
कि भारत के बढ़ते वैश्विक कद से



स्थितियां बदल गई हैं। कार्यक्रम की संयोजिका डॉ अपर्णा, सहायक प्रोफेसर, अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग ने प्रो हर्ष वी. पंत का स्वागत किया और विषय परिचय दिया। डॉ आलोक कुमार गुपा, डीन, स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज ने दिन के वक्ता को 'दक्षिण एशियाई क्षेत्र एवं भारत-प्रशांत क्षेत्र को गंभीर रूप से कैसे एकीकृत किया जाए' प्रश्न के साथ आमंत्रित किया। प्रो हर्ष वी. पंत ने बदलती विश्व व्यवस्था की समझ को गिनाते हुए अपने व्याख्यान की

शुरुआत की। बदलती विश्व व्यवस्था पर उनके व्याख्यान का मुख्य आकर्षण बहु-ध्रुवीयता की भूमिका थी। उन्होंने कहा, संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देश अंतर्मुखी हो रहे हैं और आज समान विचारधारा वाले देशों के बीच व्यापार को प्राथमिकता दे रहे हैं। उन्होंने बदलती विश्व व्यवस्था में भू-राजनीति की भूमिका पर भी प्रकाश डाला, जो अब आर्थिक कारकों द्वारा संचालित हो रही है। प्रो पंत इंडो-पैसिफिक जैसे उभरते रणनीतिक भूगोल पर भी जोर देते हुए

कहा कि यह एक सन्निहित क्षेत्र है और जिस तरह से विश्व व्यवस्था बदल रही है, उसके केंद्र में है। आज की विश्व व्यवस्था में, यूएनएससी, डब्ल्युटीओ, डब्ल्युएचओ जैसे बहपक्षीय संस्थाएं निष्क्रिय हो रही हैं, जबिक क्वॉड जैसे लघुपक्षवाद में वृद्धि हो रही है। प्रो पंत ने चीन-भारत संबंधों के बारे में बात करते हुए कहा कि 2020 में गलवान मुद्दे के बाद से रिश्ते खराब हुए हैं। उनके अनुसार, चीन एक उभरती हुई शक्ति के रूप में सभी देशों के लिए अपनी परिधि-संबंधी चुनौतियों को आकार देने की कोशिश कर रहा है। हालांकि, भारत भी बढ़ रहा है और चीन को वीटो के माध्यम से भारत के हितों में कोई भी बढ़त नहीं देना चाहता है। पहले चीन भारत को कमतर खिलाड़ी के रूप में लेता था. लेकिन भारत के बढते वैश्विक कद और अमेरिका के साथ बढ़ती साझेदारी के कारण चीजें बदल गई हैं।

**Photo-22:** On 15 May, 2024 Prof. Harsh V. Pant, Vice President, Studies and Foreign Policy, Observer Research Foundation (ORF), New Delhi and Professor of International Relations, King's India Institute, Honorary Director, Delhi School of Transnational Affairs, University of Delhi, delivered distinguished lecture on the topic "Sino-Indian Ties and the Changing World Order" at Department of International Relations, Central University of Jharkhand, Ranchi, Jharkhand.